53 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित
हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

ISSN 2277 - 9264
पीयर रिव्यूड सूची में सम्मिलित पत्रिका
शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका
अप्रैल-जून, 2025
अंक - 2

संकल्य

विशेषांक

तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकार

तेलुगु से हिंदी में अनूदित साहित्य संदर्भ ग्रंथ

(हैदराबाद विश्वविद्यालय, प्रतिष्ठित संस्थान (IOE) द्वारा वित्तपोषित परियोजना)

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

संपादक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

अतिथि संपादक
प्रो. अन्नपूर्णा सी.
डॉ. सूर्य कुमारी पी.

With Best Compliments from

PITTI LAMINATIONS LIMITED

(AN ISO 9001-2008 CERTIFIED COMPANY)
MANUFACTURERS OF
ELECTRICAL LAMINATIONS AND STAMPINGS
FOR
INDUSTRIAL MOTORS, ALTERNATORS, GENERATORS,
WIND POWER GENERATORS, ENCODER MOTORS,
DC MACHINES, RAILWAY ALTERNATORS,
ELEVATORS AND DOMESTIC APPLIANCES

AND FROM:

Pitti Castings Pvt Limited
Pitti Electrical Equipment Pvt Limited
Pitti Holdings Pvt Limited
Pitti Components Limited
Badrivishal Pannalal Pitti Trust
Raja Bahadur Sir Bansilal Motilal Charitable Trust
Raja Bahadur Sir Bansilal Dharmarth Trust
Sri Pannalal Pitti Dharmarth Trust
Sri Ranganath Mandir Rangbagh Trust
Sri Rangbagh Trust
Sri Jagannath Mandir Trust
Sri Hanuman Mandir Trust
Sri Kanta Pitti Trust
Smt Jasodabai Trust
Sanskrit Sahitya Nidhi Trust
Ram Manohar Lohia Samata Nyas

REGD.OFFICE
6-3-648/401, 4TH FLOOR, PADMAJA LANDMARK
SOMAJIGUDA, HYDERABAD-500 082
PHONES : 23312770, 23312774, 23312768
FAX NO. : 23393985
E-MAIL : info@pittilam.com
SITE : www.pittielectriclam.com

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका 53 वर्षों से निरंतर दक्षिण से प्रकाशित

हिंदी अकादमी, हैदराबाद ISSN: 2277-9264

पीयर रिब्यूड सूची में सम्मिलित जर्नल

संकल्य

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

53 वर्षों से निरंतर दक्षिण से प्रकाशित

वर्ष : 53 अंक : 2 अप्रैल-जून, 2025

विशेषांक

तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकार
तेलुगु से हिंदी में अनूदित साहित्य संदर्भ ग्रंथ

(हैदराबाद विश्वविद्यालय, प्रतिष्ठित संस्थान (IoE)
द्वारा वित्तपोषित परियोजना)

प्रधान संपादक

प्रो. आर. एस. सर्राजु

संपादक

डॉ. गोरख नाथ तिवारी

डॉ. शशिकांत मिश्र

अतिथि संपादक

प्रो. अन्नपूर्णा सी.

डॉ. सूर्य कुमारी पी.

RNI No.: 25388/74 ISSN: 2277-9264
पीयर रिब्यूड सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तम्भ

स्थापना वर्ष 1956

संकल्य

त्रैमासिक

वर्ष: 53: अंक-2 , **अप्रैल–जून, 2025**

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय
प्रो. टी मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
सुश्री कविता ठाकुर

परामर्शदाता मंडल
प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
प्रो. शुभदा वांजपे
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

मूल्यांकन समिति
प्रो. सुशील कुमार शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
प्रो. जयंतकर शर्मा
प्रो. एम. श्याम राव
प्रो. भारत भूषण

सम्मानीय संरक्षक
श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

संपादक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

प्रबंध संपादक
रेखा तिवारी

अतिथि संपादक
प्रो. अन्नपूर्णा सी.
डॉ. सूर्य कुमारी पी.

प्रकाशक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय
प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद-500035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति-नीति या विचारों से हिंदी अकादमी, हैदराबाद या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- 'संकल्य' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- हिंदी अकादमी तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित 'संकल्य' त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :
मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट हिंदी अकादमी के नाम
सचिव डॉ. गोरख नाथ तिवारी
मकान नं. 22-7/7/2/ए, जय भवानी नगर, रालागुड़ा, सिद्दिल गुट्टा कमान,
शमशाबाद, के.वी. रंगारेड्डी, हैदराबाद-501218 (तेलंगाना)
ई-मेल: **hindiakadami@gmail.com**, फोन : 9032117105

आवरण चित्र :
मीनाक्षी मंदिर, मदुरै
नोट : यह विशेषांक आई.ओ.ई, यू.ओ.एच. के सौजन्य से प्रकाशित हुआ है।

मूल्य :
एक अंक का मूल्य रु. - 250/-,
व्यक्तिगत वार्षिक सदस्यता रु.800/-, आजीवन सदस्यता : रु.6,000/- (व्यक्तिगत)
संस्थागत वार्षिक सदस्यता: रु. 1,000/-, संस्थाओं के लिए आजीवन सदस्यता: रु. 7,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क रु. 7,500/-

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ : 300

मुद्रक :
कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40-ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद-500 044
फोन : 040-27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु **Kruti Dev 010** या **Unicode Mangal** फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई-मेल : **hindiakadami@gmail.com** पर भेजें।

ISSN 2277-9264/ *पीयर रिव्यूड जर्नल* RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 53, अंक–2, अप्रैल–जून, 2025

अनुक्रम Contents

संपादकीय : प्रो. आर.एस. सर्राजु 06

अतिथि संपादकीय/आमुख : प्रो. अन्नपूर्णा सी. 14

आलेख

1. तेलुगु साहित्य परंपरा और अनुवाद : प्रो. अन्नपूर्णा सी. 17
2. विश्व मंच और हिंदी अनुवाद की भूमिका : प्रो. माणिक्यांबा मणि 35
3. अनुवाद का व्यतिरेकी एवं तुलनात्मक पक्ष : प्रो. आर.एस. सर्राजु 42
4. साहित्यिक अनुवाद : दक्षिण भारत की भाषाएँ और हिंदी : प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी 52
5. तेलुगु से हिंदी में अनुवाद की समस्याएँ : डॉ. बालशौरि रेड्डी 64
6. तेलुगु-हिंदी : अनुवाद की समस्याएँ : डॉ. एम. रंगय्या 74
7. तेलुगु से हिंदी में अनूदित चयनित उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय : डॉ. सूर्य कुमारी पी. 82
8. हिंदी और तेलुगु साहित्य के संदर्भ में अनुवाद की चुनौतियाँ : डॉ. आर. सुमन लता 103
9. तेलुगु-हिंदी समान रूपी भिन्नार्थी शब्दों का व्यतिरेकी विश्लेषण : डॉ. जे. आत्माराम 108
10. अनुवाद के विशेष संदर्भ में हिंदी और तेलुगु के भिन्नार्थी समरूपी शब्द : डॉ. नागेश्वरराव दण्डिभोट्ला 115
11. तेलुगु और हिंदी की लिपियाँ और लिप्यंतरण : नितेश मिश्र 122
12. हिंदी और तेलुगु कविताओं के विशेष संदर्भ में पारिस्थितिक विमर्श : लांडगे बाबासाहेब 127
13. तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकार श्री बालशौरि रेड्डी : डॉ. बी.यशोदा 134
14. तेलुगु साहित्य का हिंदी अनुवाद : एक विकास यात्रा : विकास कुशवाहा 140
15. आंध्र प्रदेश की भाषाएँ : एक संक्षिप्त परिचय : सुश्री पवना शर्मा 147
16. "आँधी" कहानी का अनुवाद : एक मूल्यांकन : सोनटक्के योगेश 153
17. तमिल-हिंदी के मध्य साहित्यिक अनुवाद : स्थिति एवं वर्तमान परिदृश्य : डॉ.एच. बालसुब्रह्मण्यम 161
18. दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवाद की दशा और दिशा : डॉ. एन. सुन्दरम 168

19. तमिल हिंदी के बीच साहित्यिक अनुवाद : एक मूल्यांकन	: अलमेलु कृष्णन	174
20. दक्षिण भारत की भाषाएँ और हिंदी : साहित्यिक अनुवाद	: प्रो. वी. डी. कृष्णन नंबियार	185
21. तमिल और हिंदी अनुवाद का व्यतिरेकी और तुलनात्मक पक्ष	: डॉ. सु. नागलक्ष्मी	188
22. हिंदी और तमिल का साहित्यिक अनुवाद : चुनौतियाँ	: आर. शौरिराजन	198
23. कन्नड़ भाषा में साहित्यिक अनुवादों की दशा और दिशा	: प्रो. बी.वाई ललिताम्बा	204
24. कन्नड़ तथा हिंदी भाषाओं का अंतर्संबंध	: डॉ. आलूरु राधिका डॉ. सी. जयशंकर बाबु	217
25. मलयालम भाषा के संदर्भ में नाट्यानुवाद तथा मूल्यांकन	: प्रो. ए. अच्युतन	229
26. साहित्यिक अनुवाद : दक्षिण भारतीय भाषाएँ और हिंदी की स्थिति	: सुधांशु चतुर्वेदी	237
27. मलयालम और हिंदी में साहित्यिक अनुवाद : एक मूल्यांकन	: डॉ. एस. तंकमणि अम्मा	254
28. चेम्मीन : सामाजिक यथार्थ की महागाथा	: चारुचंद्र मिश्र	265
29. तमिल और हिंदी के बीच अंतर्संबंध	: डॉ. सी. जयशंकर बाबु	274
30. दक्षिण में साहित्यिक अनुवाद : हिंदी और तेलुगु साहित्य के विशेष संदर्भ में	: डॉ. एम श्याम राव	288

संपादकीय

प्रधान संपादक की ओर से ....

संविधान की धारा 351 के अनुसार विभिन्न भारतीय भाषाओं के सहयोग से हिंदी का विकास करना आवश्यक है। इस विकास में हिंदीतर भाषाभाषी हिंदी लेखक सक्रिय योगदान दे सकते हैं। वे अपनी-अपनी भाषाओं की विशिष्टताओं से हिंदी को समृद्ध कर सकते हैं। इस दृष्टि से आंध्र के हिंदी साहित्य के विविध आयाम और उसके समाज-दर्शन की चर्चा वर्तमान समय में प्रासंगिक ही नहीं बल्कि आवश्यक भी हो जाती है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव जी लिखते हैं कि 'सभी प्रादेशिक भाषाओं के सहयोग से सर्वदेशीय हिंदी का स्वरूप बनता है। हम लोग यहाँ भारतीय के हित की दृष्टि से विचार करने के लिए एकत्रित हो गए हैं। कोई यह न सोचे कि हिंदी में हमारा स्वार्थ निहित है, इस कारण हम अपने स्वार्थ-साधन के लिए इकट्ठा हुए हैं। हिंदी के संवर्द्धन में योगदान देना हिंदीतर प्रदेशों के लेखकों का राष्ट्रीय कर्तव्य है। अब हिंदीतर क्षेत्र में प्रचार का जमाना प्राय: खत्म हो चुका है, साहित्य सृजन का जमाना आया है।' (हिंदीतर भाषा-भाषी हिंदी लेखक –संगोष्ठियाँ, भारती प्रिंटर्स, दिल्ली, 1964)

हिंदी साहित्य और संस्कृति का विकास भारतीय साहित्य और भारतीय भाषाओं के विकास के परिप्रेक्ष्य में ही होता आया है। यही नहीं भाषाई भिन्नताओं के बावजूद भारतीय संस्कृति बहुभाषी भारतीय समाज में एकता के विकास के आयाम को सुदृढ़ करती है। भारतीय भाषाओं में परस्पर प्रभाव का ग्रहण भारतीय समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं के विकास में योग देता है। भारतीय दर्शन, संस्कृति और सभ्यता की संवाहिका के रूप में हिंदी साहित्य ने भारतीय चिंतन के विकास में आरंभ से ही योग दिया था। हिंदी भाषायी प्रदेशों के विद्वानों ने ही नहीं बल्कि हिंदीतर प्रदेशों के विद्वानों ने भी हिंदी भाषा सीखी और उन्होंने अपने-अपने प्रादेशिक जन-समुदायों की

विशेषताओं और समस्याओं को समय-समय पर हिंदी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

भारत में प्रारंभ से ही हिंदी भाषा की विशेष भूमिका रही। वर्तमान तेलुगु भाषी राज्यों यथा – आंध्र प्रदेश और तेलंगाना का गठन वर्ष 2014 में हुआ था। इसके पहले 1956 में भाषावार राज्यों के विभाजन से तेलुगु भाषी जनता का पुनर्गठन आंध्र प्रदेश राज्य में हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन के समय तेलुगु भाषी जनता मद्रास राज्य और निजाम के शासन के अधीन रहती थी। इस तरह के पुनर्गठन के बावजूद तेलगु भाषी जनता में हिंदी भाषा के प्रति आरंभ से ही आदर-सम्मान का भाव था। धार्मिक क्षेत्रों के अलावा व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्रों में हिंदी का व्यापक प्रयोग होता था। चार-धामों की यात्रा करने वाले तेलुगु भाषी यात्री टूटी-फूटी हिंदी में अपनी बात कर लेते थे। संत और भक्तों के मेलों में हिंदी संपर्क भाषा हुआ करती थी। हैदराबाद राज्य में दक्खिनी हिंदी का विकास हुआ था।

भारत राष्ट्र के निर्माण में हिंदी राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रतीक हो गई थी। वह भारत वासियों की अभिलाषाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई। सन् 1893 में बनारस में नागरी लिपि के प्रयोग को प्रोत्साहन देने, शिक्षालयों में हिंदी शिक्षा को स्थान दिलाने और आम जनता में हिंदी के प्रति प्रेम पैदा करने के उद्देश्य से नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना हुई। 1910 में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना से नागरी प्रचारिणी सभा के लक्ष्यों को विस्तार मिला।

सन् 1918 में हुए इंदौर अधिवेशन में निर्णय लिया गया था कि दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार का कार्य आरंभ हो जाए। महात्मा गांधीजी ने इस कार्य की जिम्मेदारी ली। सन् 1918 में तेलुगु भाषी प्रदेशों से मुख्य रूप से आंध्र से गांधी जी के आदेशों के अनुसार हरीहर शर्मा, शिवराम शर्मा, मल्लादि वेंकट सीतारामांजनेयुलू आदि युवकों का दल हिंदी सीखने के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग गया था। सन् 1919 में ये युवक हिंदी सीखकर आंध्र प्रदेश वापस आए और उन्होंने तेलुगु भाषी प्रदेशों में अपना प्रचार-कार्य शुरू कर

दिया। सन् 1918 से लगभग 1927 तक आंध्र प्रदेश और दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार का अभियान हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से ही हुआ। इस बीच में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना हुई फिर इस सभा की ओर से हिंदी का प्रचार होने लगा।

सन् 1918 से अब तक पिछले सौ वर्षों से से भी अधिक समय से दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार व्यापक रूप में हुआ। सन् 1921 से तेलुगु भाषी राज्यों में हिंदी महासभाएँ हुई। हिंदी प्रचारकों में स्फूर्ति जगाने की दृष्टि से हिंदी प्रेमी मंडलियों की स्थापना हुई। कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ।

सन् 1880 के आसपास तेलुगु भाषी प्रदेशों में फारसी नाटक कंपनियॉं प्रमुख शहरों में हिंदी नाटकों का मंचन भी करती थीं। अपनी प्रादेशिक भाषा तेलुगु के बावजूद हिंदी स्वाभाविक रूप से तेलुगु भाषी जनता की संपर्क भाषा बन गई।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद तेलुगु भाषी प्रदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार बड़ी मात्रा में होने लगा। सन् 1927 से ही दक्षिण भारत के स्कूलों में हिंदी सिखाने की मॉंग की गई थी। स्वतंत्रता के बाद कॉलेजों और विश्विवद्यालयों में हिंदी अध्यापन की ओर ध्यान दिया गया। मैट्रिक, इंटर और बी.ए., में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन आरंभ हुआ। फिर छठवें दशक तक आते-आते आंध्र प्रदेश के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन का परिदृश्य व्यापक होता गया और शोध-कार्य भी होने लगे। अब हिंदी प्रचार-कार्य से आगे बढ़कर अनुसंधान की दिशा में अग्रसर होने लगी है।

तेलुगु भाषी प्रदेशों में उत्तर भारत से आने वाले यात्रियों के लिए बने 'गुसाई मठ' तथा संत और भक्तों के मेलों में हिंदी में विचार-विनिमय होता था। सन् 1880 के आसपास पं. शिष्ट्ला कृष्णमूर्ति शास्त्री और मंडा कामय्या के मानस के दोहों और चौपाइयों के तेलुगु अनुवाद का उल्लेख मिलता है जिनको भजन मंडलियों में गाया जाता था। इनके साथ-साथ हिंदी के कीर्तन